

सकारात्मक प्रोत्साहन और बाल प्रतिभा की पहचान: NEP 2020 और FLN के संदर्भ में एक कक्षा अनुभव

फील्ड-स्तर का दृष्टिकोण

लेखक: अरविन्द कुमार सिंह, प्राथमिक विद्यालय सहायक अध्यापक, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

गणितज्ञ डेविड पेज का एक प्रसिद्ध कथन है—

“जब बच्चे गलत उत्तर देते हैं, तो अक्सर इसका अर्थ यह नहीं होता कि वे गलत हैं, बल्कि यह कि वे किसी अन्य प्रश्न का उत्तर दे रहे होते हैं।”

यह कथन हमें बच्चों के सीखने की प्रकृति को समझने का एक महत्वपूर्ण अवसर देता है। कक्षा-शिक्षण के दौरान प्रायः हम बच्चों की त्रुटियों को उनकी अयोग्यता के रूप में देखने लगते हैं और अनजाने में नकारात्मक टिप्पणियाँ कर देते हैं—जैसे, “तुम्हें यह भी नहीं आता?” या “तुम कुछ नहीं जानते।” जबकि शिक्षा का उद्देश्य केवल सही उत्तर प्राप्त करना नहीं, बल्कि बच्चे की सोच, अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास का विकास करना भी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भी इस बात पर विशेष बल देती है कि शिक्षा-प्रणाली को बच्चों की बहुआयामी प्रतिभाओं की पहचान और पोषण करना चाहिए। नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्रत्येक बच्चा अद्वितीय होता है और शिक्षा का उद्देश्य उसकी अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित करना है। इसी प्रकार FLN (Foundational Literacy and Numeracy) का लक्ष्य केवल पढ़ना-लिखना सिखाना नहीं, बल्कि बच्चों में अर्थपूर्ण सीखने, संवाद, अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास का विकास करना भी है। कक्षा के एक अनुभव ने मुझे इस सिद्धांत को व्यवहार में समझने का अवसर दिया।

कक्षा के एक अनुभव ने मुझे इस सिद्धांत को व्यवहार में समझने का अवसर दिया।

कुछ दिन पूर्व मेरी कक्षा की एक छात्रा इसरा ने एक बिग बुक तैयार की। उस पुस्तक में कहानी और चित्र दोनों उसी ने स्वयं बनाए थे। इसरा पहले ऐसी छात्रा थी जो सप्ताह में कई दिन विद्यालय से अनुपस्थित रहती थी। वह अक्सर रोते हुए विद्यालय आती थी और कई बार पेट दर्द की शिकायत करती थी। अनियमित उपस्थिति के कारण वह शैक्षणिक रूप से पीछे रहने लगी थी और कक्षा की गतिविधियों में उसकी सहभागिता बहुत कम थी।

एक दिन कक्षा की एक गतिविधि के दौरान मुझे

यह पता चला कि इसरा बहुत सुंदर चित्र बनाती है। मैंने यह भी महसूस किया कि कक्षा में ऐसे कई बच्चे हैं जो शैक्षणिक रूप से पीछे दिखाई देते हैं, किन्तु उनकी रचनात्मक प्रतिभाएँ अत्यंत समृद्ध हैं।



मैंने एक दिन इसरा द्वारा बनाए गए चित्र को पूरी कक्षा के सामने प्रदर्शित किया और उसकी प्रशंसा की। इसके बाद जब भी चित्र बनाने की गतिविधि होती, तो विशेष रूप से उन बच्चों को प्रोत्साहित किया जाता जो शैक्षणिक रूप से पिछड़े माने जाते थे। पूरी कक्षा उनके लिए ताली बजाती और उन्हें स्वतंत्र रूप से अपनी कल्पना व्यक्त करने का अवसर दिया जाता। धीरे-धीरे इसरा स्वयं चित्र बनाकर विद्यालय लाने लगी और अपने चित्रों के बारे में चर्चा करने लगी। इन चर्चाओं ने उसके भीतर आत्मविश्वास को बढ़ाया। अब वह कक्षा में अधिक सक्रिय होने लगी और शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं में रुचि लेने लगी।

यह अनुभव इस बात को स्पष्ट करता है कि **सकारात्मक प्रोत्साहन बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित करता है**। जब बच्चे को उसकी किसी क्षमता के लिए सराहा जाता है, तो वह स्वयं को सक्षम महसूस करता है और सीखने के प्रति उसकी रुचि बढ़ने लगती है।

NEP 2020 भी शिक्षण को **बाल-केंद्रित, अनुभवात्मक और प्रोत्साहन** आधारित बनाने पर जोर देती है। नीति के अनुसार शिक्षक को बच्चों की विविध क्षमताओं को पहचानना चाहिए और ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जहाँ बच्चा बिना भय के अपनी अभिव्यक्ति कर सके।

इसी प्रकार **FLN के उद्देश्यों** में भी बच्चों को संवाद, कहानी, चित्र, गतिविधियों और अनुभवों के माध्यम से सीखने का अवसर देना शामिल है। जब बच्चे अपनी भाषा, अनुभव और रचनात्मकता के माध्यम से सीखते हैं, तब उनका अधिगम अधिक स्थायी और अर्थपूर्ण होता है।

शिक्षक के रूप में हमें यह समझना होगा कि किसी भी बच्चे की प्रगति केवल परीक्षा के अंकों से नहीं आँकी जा सकती। प्रत्येक बच्चे के भीतर एक विशेष प्रतिभा होती है—किसी में चित्रकला, किसी में कहानी कहने की क्षमता, किसी में संगीत या किसी में खेल की दक्षता। यदि हम इन प्रतिभाओं को पहचानकर उन्हें प्रोत्साहित करें, तो वही बच्चे आगे चलकर शैक्षणिक क्षेत्र में भी बेहतर प्रदर्शन करने लगते हैं।

अक्सर शैक्षणिक रूप से पिछड़े बच्चों को घर पर भी नकारात्मक टिप्पणियाँ सुननी पड़ती हैं। ऐसे में शिक्षक की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि विद्यालय में उन्हें प्रोत्साहन, संवाद और सम्मान मिलता है, तो उनका आत्मविश्वास पुनः विकसित हो सकता है।

अतः कक्षा शिक्षण के दौरान यह आवश्यक है कि शिक्षक बच्चों से संवाद करें, उन्हें अपनी बात कहने के अवसर दें, उनकी रचनात्मक प्रतिभाओं को पहचानें और सकारात्मक प्रोत्साहन प्रदान करें। ऐसा करने से न केवल बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ेगा, बल्कि उनके **साक्षरता, संख्याज्ञान और समग्र शैक्षणिक विकास** में भी उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देगा।



लेखक परिचय:

अरविन्द कुमार सिंह के प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, जनपद बुलंदशहर उत्तर प्रदेश में पिछले 9 वर्षों से सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत है। इनके विद्यालय के छात्र-छात्राएं पिछले 3 वर्षों से उड़ान नाम की दीवार पत्रिका बना रहे हैं साथ ही छात्र-छात्राओं के लिखे लेख, कविता, कहानी और चित्र बाल विज्ञान पत्रिका चकमक में लगातार प्रकाशित होते रहते हैं। इनके विद्यालय के छात्रों द्वारा बनाया गया टाइमलाइन कैलेंडर को SCERT राजस्थान द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हवा महल पत्रिका में छप चुका है। इन्हें नवाचारी गतिविधियाँ समूह भारत द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय नवाचारी शिक्षा रत्न सम्मान 2023-24' में शिक्षा रत्न सम्मान से सम्मनित किया जा चुका है। इनके कक्षा अनुभव लगातार विभिन्न पत्रिका एवं वेबपोर्टल पर प्रकाशित होते रहते हैं।